TEXT CROSS WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY
OU_186136
UNIVERSAL LIBRARY

आभा

श्री नन्दकिशोर

प्रकाशक

तारा मण्डल

रोसड़ा ।

मुद्रक

श्री बीरबल सिंह

ए० बोस प्रेस—मोतीझील, मुजफ्फरपुर ।

परम पूज्य पिताजी

को

भूमिका

साहित्य की वाटिका में जो नये पौधे उगे आ रहे हैं, उनमें कुछ तो अभी मिट्टी के नीचे ही दबे पड़े हैं, कुछ अंकुरित हो कर बाहर फूट निकले हैं और कुछ तो बढ़कर इतने बड़े हो गये हैं कि अब उन्हें प्रकाश चाहिये, रस चाहिये, और चाहिये चतुर माली की निगरानी ताकि वे कुसमय में ही सूख न जायें।

प्रस्तुत कविता-संग्रह 'आभा' के रचयिता श्री नन्दकिशोर सिंह काव्योद्यान के ऐसे ही पौधों में से एक हैं, जिन्होंने भूमि की मृण्मयी शय्या को छोड़कर अभी-अभी कल्पना के आकाश में अपना सिर उठाया है, और जिनमें नवीन आशा की हरी-हरी कोमल पत्तियाँ निकल कर स्वस्थ, सुन्दर और उज्ज्वल भविष्य की ओर संकेत कर रही हैं।

× × × ×

२१—२२ वर्ष की उम्र, गोरा रंग, 'दीपक की लौ' सी दुबला-पतला छरहरा बदन, चेहरे पर तरुणाई का तकाजा, भींगती हुई आ रही मसें, इन्द्रधनुष के सातों रंग से रंगीन हृदय, प्राण और मन, कल्पना के पंख पर उड़ते हुये जिनके भाव और सितार के तार पर जैसे झंकार करती हुई भाषा, शरत् के प्रथम-प्रथम प्रभात की आभा—नन्दकिशोर के परिचय में ये अपूर्ण, किन्तु, सबल वाह्य रेखायें खिंची हुई हैं, जो

नदी के प्रवाह की तरह, सीधी नहीं, अपना मार्ग आपही बनाने में टेढ़ी-मेढ़ी-सी गई हैं।

× × × ×

'आभा' में कवि की वे ही कुछ चुनी हुई रचनाएं हैं, जो किसी मंगलमय प्रभात में सहसा प्रथम-प्रथम किरणों के समान फूट पड़ी हैं। रजनी का अवसान समीप है। जीवन में अभिनव प्रभात आने ही वाला है। फिर भी अभी अंधकार बिलकुल मिट नहीं गया है। सहसा कवि देखता है—

तिमिर के बीच एक क्षण मौन
खुला था एक किरण का तार

क्षण भर के लिए, जैसे किरण का वह एक तार, सबसे पहला तार, उस अन्धकार में खुला और उसने सारे संसार का रूप ही परिवर्तित कर दिया।

नीड़ में जगे विहग के प्राण
प्राण में मुखरित मंगल गान।

और

विटप को मिला फूल वरदान
फूल को परिमल का अनुराग। आदि।

"केमने आसिल रविर कर" से लेकर प्रथम रश्मि का आना रंगिनि कैसे तूने पहिचाना?" तक यह एक सिलसिला है, जहाँ स्वर्गीय आत्मा-

नुभूति में मानव 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' भिन्न कंठ, स्वर और शैली में पुकार उठता है।

आभा देख कर कोई भी पाठक मेरी इस राय से असहमत नहीं होगा कि कवि ने अपनी भावनाओं को रूप-रंग देने के लिए विशाल अन्तर्दृष्टि पाई है। किसी भी वाद शैली या गुरुडम से परे होकर, जीवन में जहाँ कहीं भी नवीन सफूर्त्ति, प्रेरणा या अनुभूति मिलि, आग्रह-पूर्वक उसने उसे अपनाया है। और इस तरह एक संकुचित क्षेत्र में, एक संकुचित धारा में न बह कर वह मानव-प्रेम के एक ऐसे समुद्र में तैरने का आनन्द ले रहा है, जहाँ उसकी—'मुग्ध थी आज देख कर आँख, जगत का सीमाहीन प्रसार" जहाँ उन्मुक्त तरंगें एक ओर से आती हैं और दूसरी ओर से निकल जाती हैं और जिसके ऊपर मुक्त आकाश है, विमुक्त वायु है और उन्मुक्त प्रकाश है।

यह सम्भव है कि कोई कलाकार प्रत्यक्ष जीवन में अपने को छिपाले, परन्तु, यह असम्भव है कि अपनी कला में भी वह इस रहस्य को प्रकट न होने दे। 'नन्दकिशोर' का संकोचशील जीवन उनकी रचनाओं में जिसे छलक-छलक पड़ता है—एक मौन, किन्तु, अस्पष्ट इंगित के स्वर में।

'प्रगति के पथ पर' 'सितारे के तार पर' और 'कल्पना के पंख पर'—ये तीनों शीर्षक ही इस बात की ओर बारम्बार इशारा कर रहे हैं कि कवि के हृदय में एक ओर जहाँ सौन्दर्य और प्रेम की मधुर वीणा झंकार कर रही है, दूसरी ओर आत्म-जिज्ञासा और विश्व-प्रपंच के

अज्ञात कुतूहल भी प्राणों को उत्कंठित कर रहे हैं और इतना ही नहीं, देश, काल और संसार का भयानक कर्म-कोलाहल भी जीवन को झक-झोर रहा है।

मानव मन के विकार जो तितली की तरह एक फूल से दूसरे फूल पर जा मँडराने लगते हैं, कभी स्थिर नहीं रहते। और ऐसे मनुष्य के लिए तो अवश्य ही यह और भी कठिन हो जाता है, जो स्वयं साधन-सम्पन्न होते हुये भी देखता है कि उसकी चारों ओर यह जो कराल काल का भयानक ताण्डव-नृत्य हो रहा है, वह वास्तव में क्या है?

जीवन में जो झुक न सका है
अपने पथ पर रुक न सका है
पथ सीधा करने भूधर जो अपने कर से तोड़ रहा है
विप्लव उसको खोज रहा है

और, सचमुच विप्लव ऐसे लोगों को ही खोज रहा है, क्या इसमें भी कोई शक है?

यद्यपि भारतवासियों के रक्त का रंग भी अन्य देशवासियों की तरह ही लाल होता आया है, फिर भी हमारे जीवन में, कर्म में, धर्म में और काव्य में भी अनायास जो यह लाल रंग घुस आया है, वह अवश्य ही रूस का है और निस्सन्देह इसमें विदेशी भावों की प्रेरणाएँ हैं। हम यह चीज बुरी नहीं कहते। अच्छी चीज किसी खास जाति, समाज या देश की बपौती नहीं—सत्य पर सबका सार्वजनिक अधिकार

हैं—भले ही वह सत्य का प्रकाश करोड़ों मील दूर से भी क्यों न आता हो—जैसे दिन में सूर्य का प्रकाश। कवि इस सम्बन्ध में जागरूक है, उसके आसमान में भी 'लाल सितारा' चमका है और उसको भी 'लाल फौज' आगे बढ़ी है 'लाल पताका' फहराई है, 'लाल सलामी' दी है और 'कय्यूर के शहीदों के प्रति' 'अरुण अरुण नमस्कार' किया है। यह 'प्रगतिशीलता' चाहे हमारी गुलामी से उत्पन्न हुई हो अथवा नवीन युग की अँगराइयों से, परन्तु, इसमें सन्देह नहीं कि हमारे युग-युग की रूढि, कुसंस्कार और अज्ञान के खिलाफ एक ठोस आवाज बुलन्द करती है और आगे आनेवाली पीढी के लिये एक नवीन विचार, आशा और विश्वास देती है।

लेकिन जीवन में क्या इतना ही सब कुछ है? हसिया काटती है, हथौरा चूर-चूर कर देता है। कर्त्तन और प्रहार ही क्या जीवन के मूल तत्त्व हैं? नहीं। प्रकृति यदि ध्वंसक है, तो वह निर्माता भी तो है। नदी किनारों को काटती है, तो वह खेतों को नई मिट्टी से भरती भी तो है। विधाता कभी आवेश में आकर ताण्डव करता है, तो वह फिर शान्त होने पर सृष्टि का कर्म भी तो अपने ही हाथों से चलाता है? आखिर जीवन में हाहाकार ही भरा नहीं है, उसे शान्ति भी चाहिये। और यह शान्ति की शय्या वहाँ हैं, जहाँ—

शशि की शीतल छाया छाये
रूपसि का शृङ्गार
हरी दूब की सेज बिछी है
पायल की झङ्कार

मंद - मंद मधुभार उठाये
बहती मधुर बयार

अथवा वहाँ, जहाँ—

रँगता है राकेश नील नभ का दुकूल धीरे - धीरे
फैली धवल विभा अवनी तल, सागर के तीरे - तीरे

कवि स्वयं इस द्वन्द में पड़ता है और कहता है—

एक चमन के बाहर - बाहर
एक निकट से घेरा है
वह राजा का घर है पंछी
यह रानी का डेरा है
इनकी एक कहानी पंछी
सुनलो कितना फेरा है
कलियों का सौरभ लूटा है
भौरों से रस पेरा है

और तब अन्त में शायद उसका यही उत्तर मालूम पड़ता है—

मानव - मन कर अमल कमल दल
जरा करो प्रस्फुरण अमर हे।

और

सुख दुःख दोनों में मैं गाऊँ
निशि दिन आगे कदम बढ़ाऊँ
कवि हूँ बस, कविता करने का केवल सर पर मंजुल वर दे।
मंजुल भार !

और साहित्य-संसार में एक ऐसे कवि का अभिनन्दन कर आज मैं अपने को प्रसन्न पाता हूँ।

एरौत
५—११—४३

आरसी प्रसाद सिंह

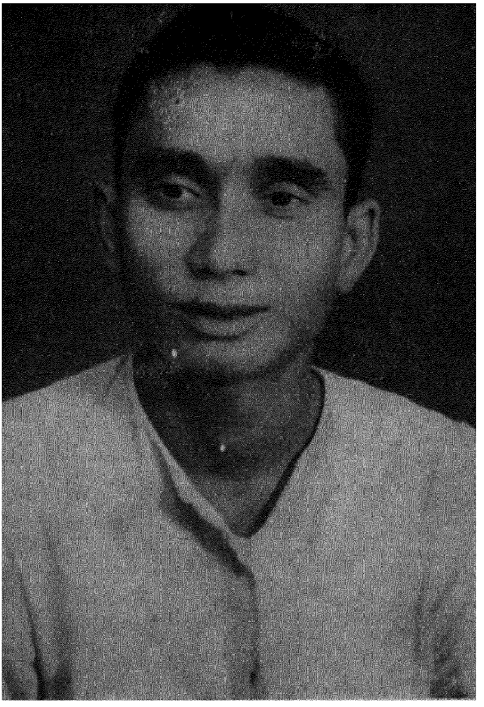

श्री नन्दकिशोर

कल्पना के पंख पर

जीवन-गान

तिमिर के बीच एक क्षण मौन
खुला था एक किरण का तार

नीड़ में जगे विहग के प्राण
प्राण में मुखरित मंगल गान
विहँसते कनक कलस की ओट
आज का मंजुल बाल विहान
डाल पर फूल, फूल पर भ्रमर
पात पर नाचे चंचल किरण
किरण में नहा तुहिन की बूंद
विभव का मिट जाती धो चरण

रेणु में मिला बूँद का रूप
बूंद में निहित निखिल संसार

विटप को मिला फूल वरदान
फूल को परिमल का अनुराग
और निर्झर को झर-झर गान
विहग को कंठ कंठ में राग

मुझे माटी की काया मिली
देह को जीवन का अभिमान
और जीवन ने पायी भेंट
देव से बस केवल अवसान

समीरण चले मलय को छोड़
लुटाने सौरभ का संसार

मनुज जीवन का पहला भोर
भोर कितना उज्ज्वल अभिराम
सरल था शैशव औ' सुकुमार
और जीवन की गति अविराम
दूर था दूर, बहुत ही दूर
ज्ञान से पुण्य पाप से परे
किरण से बहे ज्योति की धार
व्योम से झर झर मानस भरे

मुग्ध थी आज देख कर आँख
जगत का सीमाहीन प्रसार

बाल कुछ बड़ा साथ ही साथ
बड़ा उसका छोटा संसार
विपिन में बड़ी विटप की डाल
डाल में नव कलियाँ दो चार

फूल में यौवन की मुस्कान
और यौवन है चलता रूप
रूप में भरा पड़ा अभिमान

गगन पर घिरे बरसते मेघ
हृदय में फूट पड़ी रस धार

उदधि में नाचे चंचल लहर
शिखर पर घूम घूम कर मोर
उमड़ कर निर्झरणी का प्यार
भिगोता कठिन उपल का कोर
हृदय में अनजाने ही आज
उठा करती है एक हिलोर
न जाने आज कहाँ से कहाँ
बहा कर ले जाए किस ओर

आँख में नशा नशे में मोह
मोह में सोने का संसार

आज दो जीवन सीमा बीच
व्योम में जलता है दिनमान
तीर से उधर पार से इधर
लहर पर गाता यौवन गान

मस्त तुम दीवाने दिन चार
जवानी अभिलाषा की भोड़
निराली है जीवन की चाल
भीड़ है खड़ी शाम के तीर

लूटने जीवन का शृंगार
खड़ा है आज मौन पतझार

डूबने चला आज दिनमान
गगन का होगा तममय भाल
झरेंगे रेणु रेणु में फूल
और सूनी होगी तरु डाल
अचानक आ जायेगी साँझ
मौन हो जायेंगे तब प्राण
मौन में हो जायेगी लीन
वीण की बड़ी सुरीली तान

बजेंगे तार वीण के पार
विश्व में होगी एक पुकार

प्रेयसी कौन तुम

कर रही है वास उर आवास में
कल्पना की या परी आकाश में

संगिनी तू कौन जीवन-जात हो
या घटा घेरे गगन का गात है?

कौन तू अकलंकिनी उज्ज्वल अरी
तिर रही है भाव की सरि में तरी

हो रही उन्मन अरी ओ चंचला
तू विरह का गान गाती कोकिला

या दिवस अवसान की तू अरुणिमा
या असीम जलधि लहर हित पूर्णिमा

हर्ष की जननी कहूँ या वेदना
या कि कह दूँ देवि, निर्मम कल्पना

वेदना के गान मेरे

वेदना के गान मेरे
करुण उर संतप्त जीवन के मधुर तुम गान मेरे
वेदना के गान मेरे

ये मृदुलतम भाव उर के
हैं अतल उद्गम तुम्हारे
जागता सोता अहर्निश
जा 'वहीं अनुभव हमारे
दीन जीवन बीच कवि के तुम अमर अरमान मेरे
वेदना के गान मेरे

चिर वियोगिन की व्यथा में
रूप प्रियतम का सजाना
विरह-व्याकुल संगिनी के
आँसुओं को चूम जाना
व्यथित उन्मन मनुज मन में छा करुण कल्याण मेरे
वेदना के गान मेरे

कल्पना में लीन कवि के
करुण गीत अबोध सुन्दर

तप्त अंतरतम मनुज के
रेत में निर्झर झरा कर
भग्न भाव उदास जीवन के अरुण अभिमान मेरे
वेदना के गान मेरे

हो उठे मुखरित जगत मन
मंजु गुंजन से तुम्हारे
घिर उठे घन-सा सघन बन
मधु प्रणय नभ पर तुम्हारे
बह बयार खिला सुमन दल चल मलय से प्राण मेरे
वेदना के गान मेरे

पावस-दर्शन

विकल तप तप कर आतप प्राण
गये जब झुलस धरा के अरे !

निकट कुछ सरस न आया ध्यान
उठीं आँखें अम्बर की ओर
लहर कर जिससे रवि की आग
चली छूने धरती की छोर
जले तरु के पल्लव परिधान
उड़े खग नभ में करते शोर
सिहर सरि सूखी पतली बनी
रही थी पल पल सांसें तोड़
सरस करने को बैठ विचार
इला को अब हर कोई क

दिवस पर दिवस अनेकों गये
गई तारों से जगमग रात
असित होता जाता था शनैः
सोच में जल-जल जल के गात

अमित अर्चन से भी जब देव
न दे पाये जल-वर या बात
उठा विश्वास समझने लगे
लोग, बल, आज प्रकृति जय करे

पड़े पदतल की जागृति देख
सशंकित हो जाता है दमन
आह जब करती अगजग ध्वनित
डोलने लग जाता है गगन
चढ़े अम्बर के प्रबल प्रताप
उतर जाते करने को नमन
भयातुर हो देखे दिनमान
भूमि के कोटि लाल दृग गड़े

त्वरित तत्पर होकर रवि चले
सभय जग देने जल का दान
उतर अम्बर से शम्बर बीच
अरुण पय का ले उड़े विमान
लगे भरने सीकर से सदन
व्योम का सीमाहीन महान
प्रथम दिनकर घर पावस आज
पधारे पाहुन बन छविमान
क्षितिज पर घन के उठे पहाड़
उठाये सिर मंगल-घट भरे

मची भू पर पावस की धूम
समीरण नभ को सजने लगे
चले खग लौट विटप की ओर
तार पाँखें बन बजने लगे
विविध वर्णों का ओढ़ दुकूल
मधुर मन मिहिर बिहँसने लगे
बजे पावस के घन में मुरज
ताल पर मोर नाचने लगे
चरण घन के नर्तन हित उठे
निखर नख से किरणावलि झरे

बँधे पग में नूपुर झम बजे
कलस से छलक पड़े रस धार
विजन वन बिखर बिखर रसधार
बूँद से झरने लगे फुहार
उगे अंकुर अवनी के अजिर
अजिर में उमड़े हर्ष अपार
अमित करुणा का मंगल रूप
चली गंगा जमुना की धार
मुदित मन वेणु फूँक संसार
हरितिमा को जीवन से भरे

कारागार

उपल के काले कारागार

गये कितने दिन मेरे बीत
तुम्हारे घर आये हे मीत
न जाने किसकी धुँधली याद हिला जाती खिड़की के तार
उपल के काले कारागार

अरे हम मानव की संतान
और तुम हो निर्मम पाषाण
अरे फिर हम दोनों के बीच रहेगा क्या तेरा व्यवहार
उपल के काले कारागार

अरे अब क्या जाऊँ उस पार
दिये हैं जब सब लोग बिसार
तुम्हारे जन औ' आँगन मीत बने अब घर घर के परिवार
उपल के काले कारागार

सँदेशे देते हैं जो फूल
विहग कह देना जायें भूल
कहो तुम भी मंगल हे मीत, चमन उनका होवे गुलजार
उपल के काले कारागार

विहग जा के कह देना आज
न अब हमको फूलों से काज
मगन रहते हैं आठों याम, सजाने में अपना घरबार
उपल के काले कारागार

विहग आये हो तो कुछ देर
बैठ लो ना, आओगे फेर
तुम्हारे रस रंगों से दूर यही मेरा छोटा संसार
उपल के काले कारागार

पके सन से ये मेरे बाल
शिथिल मेरे चरणों की चाल
तुम्हारे घर का वह अपनाव विहग हो भूल गये हैं प्यार
उपल के काले कारागार

कभी तुमसे मैं भी आजाद
दिला मत बीते युग की याद
अरे घिर आता है अवसाद, तुम्हें जाना है तम के पार
उपल के काले कारागार

विहग, आती है काली रात
तुम्हें जाना है योजन सात
बलेंगे अब प्राणों के दीप जलेगा एक विभा का तार
उपल के काले कारागार

पिय की बोली

तम निर्मित प्राचीर पार सखि
पंछी पिय की बोली बोले
रूप दूर मोती का सजनी
ध्वनि पर ही दृग झोली खोले

विवश खड़ी क्या इस जीवन में
यह अभेद जड़ टूट सकेगा
भले न बिखरे पर लघु उर का
परिचय उनसे छूट सकेगा

एक किरण आशा की सजनी
वह भी जिस दिन बुझ जायेगी
तुम गाते उड़ जाना पंछी
मैं गुमसुम ही सो जाऊँगी

अन्तर

मैं अपने घर बैठा बैठा
जीवन के पथ पर चलता हूँ
कुछ ऊपर झिलमिल जलते हैं
मैं बैठा बैठा जलता हूँ

कुछ खोज रहे आकुल प्रतिपल
अर्चन को कौन नगीना है
मैं अंतरतम में देख रहा
शत मथुरा और मदीना है।

इक ओर अस्त रवि होता है
इक ओर चाँदनी लहराती
पर मेरे मंजुल मानस में
हर याम यामिनी हहराती

अबतक निगूढ़ वह देश जहाँ
जाता पंथी रोजाना है
मैं अविकल आज मुदित बैठा
वह जग मेरा पहिचाना है

पर जान न पाया जीवन से
यह कहता कौन निरंतर है
मैं महा अमर तू क्षण-भंगुर
बस इतना ही तो अंतर है।

पंछी

पंछी उड़ उड़ जाये

स्वर्ण तार का बना निकेतन
नीलम मण्डित द्वार
आस पास सुमनों का खिलना
जग का मंजुल प्यार
देता नित्य प्रलोभन सुख का
आशा का संसार
पर परदेशी पंछी के उर सुख साधन ना भाये
पंछी उड़ उड़ जाये

माया युग से खड़ी रोकती
ममता का ले पाश
आये और गये हैं कितने
सरस बरस मधुमास
ले जाती निराश को निज घर
आ आ करके आस
दुख में नाच नाच कर भोला पंछी मन बहलाये
पंछी उड़ उड़ जाये

शशि की शीतल छाया छाये
रूपसि का शृंगार
हरी दूब की सेज बिछी है
पायल की झंकार
मंद मंद मधुभार उठाये
बहती मधुर बयार
पर पंछी मन हारे अपने कुछ रोये कुछ गाये
पंछी उड़ उड़ जाये

स्वर्ण तार को झकझोरे नित
खोजे घर की राह
उद्वेलित हो रहा हृदय है
घर जाने की चाह
खुल जाता है द्वार एक दिन
आता एक प्रवाह
तब सूने नभ में निज पर का पंछी पाल उड़ाये
आजादी से गाते गाते अपने घर को आये
पंछी उड़ उड़ जाये

चाँदनी

रँगता है राकेश नील नभ का
दुकूल धीरे धीरे
फैली धवल विभा अवनीतल
सागर के तीरे तीरे

बहुत दूर नीले नभ में
कुछ जलते पीले पीले हैं
दिखा रहे जीवन पथ में
कुछ ऊँचे बीचे टीले हैं
हटा रही कैरव अधरों पर
किरण करों से अवगुंठन
सजा रही रजनी को प्रतिपल
दे उडुगण का आभूषण
नीरवता जागी जग सोये
जड़ चेतन दोनों घर घर
छिड़क रही है दूर्वादल पर
अंजलि में मोती भर भर
आज निविड़ तम के आँगन
आलोक बिखर सी होती है

कुछ पगाओं को छवि दो पूनो

खाली जिनकी झोली है

अलसित जग का जीवन सोया

बोले हृत्तंत्री के तार

रजत चाँदनी में निगूढ़ है

निबिड़ सुप्त सारा संसार

तव चरणों का रणन-अनुरणन

निर्झरिणी का पानी है

आकुल जग के जीवन में तू

विगलित आज हिमानी है

प्राची में लघु बाल अरुणिमा

ने ताना ताना-बाना

डुबती डुबती सिखा रही है

हमें पूर्णिमा मुस्काना

मरम

यह कैसा गुलजार चमन है
एक नज़र देते जाना

ऊपर से क्या देखे पंछी
नीचे से होते जाना
गाते हैं जो फूल गीत
उन गीतों को सुनते जाना

टहल टहल टहनी टहनी मन
पंछी बहलाते जाना
बहती है रस धार धार में
मनुआ नहलाते जाना

आया है तो चहल पहल की
एक खबर लेते जाना
यह कैसा गुलजार चमन है
एक नजर देते जाना

यह असार संसार नहीं है
यह जीवन रस-खान लिए

पी पाये आये जो पंछी
पीने का अरमान लिए

निरख न इन भोली कलियों को
अधरों पर मुसकान लिए
पंछी इनका आदर करना
ये सर पर बलिदान लिए

कली और भौंरे का आलम
तनिक देखते ही जाना
यह कैसा गुलजार चमन है
एक नजर देते जाना

एक चमन के बाहर बाहर
एक निकट से घेरा है
वह राजा का घर है पंछी
यह रानी का डेरा है

इनकी एक कहानी पंछी
सुन लो कितना फेरा है
कलियों का सौरभ लूटा है
भौरों से रस पेरा है

लुटे अभागे बुला रहे हैं
एक पहर देते जाना

यह कैसा गुलजार चमन है
एक नजर देते जाना

वे कहते थे धरती मेरी
धरती-वाला भी मेरा
इन दोनों के बीच बखेड़ा
पंछी क्या विचार तेरा

एक धरम राजा का कहते
एक करम का है फेरा
इन दोनों में कौन मरम है
पंछी मैंने भी हेरा

तुम भी मरम सोचते पंछी
एक सफर करते जाना
यह कैसा गुलजार चमन है
एक नजर देते जाना

महा-प्रयाण

रुक जरा सा प्यार कर लूँ
आ रहे हैं मरण प्रियतम शांति से शृंगार कर लूँ
रुक जरा सा प्यार कर लूँ

रश्मि से सोपान निर्मित
व्योम से छूता धरातल
चढ़ उसी पर आ रही है
देवि नीरवता अचंचल
विश्व को जीवन चढ़ा कर शून्य के सत्कार कर लूँ
रुक जरा सा प्यार कर लूँ

जा रहा अज्ञात जग को
दूर इन तारों गगन से
देख पाऊँ गान निज पथ
भेद तम भींगे नयन से
वह्नि में दे होम जीवन ज्योति का त्योहार कर लूँ
रुक जरा सा प्यार कर लूँ

संध्या

अरुण अनल में रक्त वसन धर
अविकल मन दिनमान जल रहा
देख दिशा पश्चिम के सिर से
अविरल क्यों सिंदूर धुल रहा

जाग जाग निःसीम व्योम के
दिव में सोनेवाले तारे

दिशा दिशा से भीम-भयंकर
तम का यह तूफान चल रहा

उतर रही संध्या धरणीतल
व्योम वासिनी असित वसन धर
नील निलय की नीरवता को
विहग सुनाते गान चले घर

जगो वेदना उर में गुमसुम
रवि वियोग में विकल तिमिर से

सुखद उषा का स्वप्न देखते
लिए नयन अंभोज बंद कर

गा गा गीत किशोर ग्राम के
झूल रहे झूला तरु के तल

भर कर जल झट घट घर जाती
बल खाती रमणी दल के दल

अब न कुंज में फूल फूल पर
झूम झूम कर भौंरा गाये

रजत ज्योत्सना में सुदूर पर
बहती सरिता का झलके जल

वसुधा पर घर घर की घरनी
घूम घूम कर दीप जलाती
कुछ चंदा से माँग माँग कर
निज शिशुओं को दूध पिलाती

सान्ध्य गीत गाया निसर्ग ने
झींगुर का मंजीर बज उठा

नाच नाच आरती विश्व को
जुगनू की छवि है दिखलाती

लगीं बिहँसने गगन कुंज में
उडुगण की कलियाँ अलबेली
शनैः शनैः बह चला समीरण
डोल डोल कलिका खुल खेली

वात विकम्पित डाल विटप के
कहीं कहीं पर पंछी बोले

रजनी बढ़ती चली निरंतर
संध्या होती गई पहेली

सितार के तार पर

गीत

मानव मन कर अमल कमल दल
जरा करो प्रस्फुरण अमर हे
दूर परस्पर का दुराव कर
सुधा धार भूपर सरसा दो
समझ सके निज सा तू पर को
मानवता की ज्योति जला दो
विनय यही तुमसे करुणा कर
हर्षित हो शोकित शोषित दल
भेद भेद दो सुख समता दो
छलका दो प्रशांत जल छलछल
विगलित कर कलुषित भावों को
भरो हृदय में प्रेम प्रखर हे

गीत

जीवन चंचल चरण चले
पथ अशेष घर दूर निकट मन
तम में प्राण पले
जीवन चंचल चरण चले
आशा किरण निरख धीरज धर
राही राह धरे
एकाकी पथ की असीमता
अविकल पार करे
क्या जाने मिल किस अनंत से
नीरव रूप सजे
पंथी, फिर मत तार बजे

गीत

लहर लहर मेरे जीवन घन
आओ आज अजन अपार से
पथ भूले सुख दुख के संगी
हहर हहर मेरे जीवन घन

घुमड़ घुमड़ नाचो लघु उर में
हे करुणा के पुंज वारि नव
उमड़ उमड़ उठ सघन गगन घिर
भूपर सौरभ बहा सरित बन

घहर घहर मेरे जीवन घन
कुसमित कर कोमल नव अंकुर
अजल विकल जग के आँगन में
झहर झहर मेरे जीवन घन

गीत

सुने हम बोल ।
इस गुमसुम में गये अपरिमित
मनहर पल अनमोल
अधर दल खोल
सुने हम बोल
संजोये युग युग से मैंने
स्नेह नीद में तोल
उसे जताने आये तेरे घर
अपना पट खोल
हे मंदिर के देव
नहीं चाहता जी देने को
जब मंगल वरदान
देव देने को ही अभिशाप
जरा सा डोल
अधर दल खोल
सुने हम बोल

गीत

शिथिल चरण जात
पग पग पर रुकत झुकत चौंकत बल खात
पायल जब झमक उठत सिहर जात गात
शिथिल चरण जात
पुलकित मन चपल नैन अंचल फहरात
कंचुकि में कठिन उरज रह रह अकुलात
शिथिल चरण जात
सघन गगन निविड़ तिमिर डरत देख रात
दर्शन की चाह देत पल पल अवदात
शिथिल चरण जात
पथ पर ही पाय प्राण चुपके मुसकात
सिकुड़ सिमिट बाहु बीच
बोलत न लजात
शिथिल चरण जात

गीत

परदेशी पाहुन आये

आने का संदेश नये घन पिय का जब से लाये
मेरे जीवन की जमुना में कोमल कुमुद फुलाये
तेरे आने के पहले ही जिससे मत बुझ जाये
इसीलिए तो साजन मैंने दीपक मधुर जलाये
तेरे आने के मंगल में पंछी तरु पर गाये
बिहँस बिहँस अम्बर से तारे अविरल मधु बरसावे
खोज खबर लेने साजन की जो मेरे घर आवे
उन पर लुटा चुकी जब सब कुछ साजन कर फैलाये
डर था यही कहीं साजन फिर मेरे रूठ न जाये
मैं रो रो पछताई सजनी वे हँस हँस सुख पाये
युग के मेरे उलझे कुन्तल चुपके से सुलझाये
मधुर मधुर मेरे कानों में क्या जाने क्या गाये
इसी समय लहरों में दीपक सिहर सिहर बुझ जाये
हम दोनों तम में खो जायें तम हममें खो जाये

गीत

लहर के दोलों पर मत झूल
लहरियाँ ले जायेंगी दूर
किनारे पर ही मोती दूर
लहर है अगम घोर गम्भीर
सजीले हैं कितने ये कूल
लहर के दोलों पर मत झूल
तरी लहरों में होगी चूर
बिखर जायेंगे संचित नूर
लगेगी जब लहरों की चोट
वियोगी जाएगा पथ भूल
लहर के दोलों पर मत झूल
सुखद तेरा अपना संसार
बढ़ाओ ना इनसे ही प्यार
लहर के अंचल में है ताप
झुलस जाएगा मंजुल फूल
लहर के दोलों पर मत झूल

गीत

मुसाफिर जाओगे किस ओर
गये दिन फिर क्या रहे विचार
सफर समझा था क्या खिलवाड़
धरा पर तम का पारावार
गगन में घिर आये घन घोर
मुसाफिर जाओगे किस ओर
थके तेरे पग हैं लाचार
कठिन इस पथ का अमित प्रसार
तुम्हें जाना है तम के पार
न होगा फिर इस निशि का भोर
मुसाफिर जाओगे किस ओर
निरंतर आता जाता नाश
और तुम आशा रहित उदास
युगों से कठिनाई का पाश
आज फिर यदि तुम सके न तोड़
मुसाफिर जाओगे किस ओर।

गीत

मन मौन त्याग कुछ बोलो।
उत्पीड़क जग के उर में करुणा की मिसरी घोलो।
मन मौन त्याग कुछ बोलो।

आँसू की लहर उठी है
आँखों के उपकूलों में
पीड़ा फिर जाग पड़ी है
उर उपवन के फूलों में
तारों से कह दे कोई
हो मंद मंद अब बलना
निशि बीत कहाँ पाई है
जब होगा निशि भर जलना

अच्छा, इस झुटपुट में ही पंछी निज पर अब खोलो।
मन मौन त्याग कुछ बोलो।

गीत

आशा के धागे में मालिन।
चुन चुन पल कण कण को गूँथो
देखो संध्या आती साथिन।

इस क्षण दिन है, पथ आगे है
और लक्ष्य भी दूर नहीं है
जो ही अब बच पाये पल हैं
इनमें ही कुछ बढ़ जाना है
उतर रही रजनी आँगन में
तम ही तम सजनी जीवन में

अब न बिखरने पावे साथिन
लम्बी आशा की डोरी में
आज पिरोना क्षण क्षण मालिन

गीत

माँ मेरा उर उज्ज्वल कर दे
जग उपवन में आग लगी है
भीगी पलकें कहाँ लगी हैं
जग पीड़ा का दाह अरी माँ अब तो कुछ कुछ शीतल कर दे
माँ मेरा उर उज्ज्वल कर दे।

तरि है खेवनहार नहीं है
मैं हूँ पर पतवार नहीं है
तन में मन में ओ मेरी माँ अब कुछ कुछ तू साहस भर दे
माँ मेरा उर उज्ज्वल कर दे

सुख दुख दोनों में मैं गाऊँ
निशि दिन आगे कदम उठाऊँ
कवि हूँ बस कविता करने का केवल सर पर मंजुल बर दे
माँ मेरा उर उज्ज्वल कर दे

गीत

हे ऊपर के उज्ज्वल तारे।

आज अमा की तिमिर-पुंज निशि
आ न सकेगा रजत-कुंज शशि
मग में काली रात ढल चुकी
हटता बढ़ता है पग मेरा
हे ऊपर के उज्ज्वल तारे।

निज छवि से आलोक जगाओ।
आऊँ मैं निज लोक बताओ
अंत कहाँ पाया है अबतक
भटका भूला कूल किनारे
हे ऊपर के उज्ज्वल तारे

कनक किरण की चादर रख दे
मेरा मन! जग की सुधि खो दे
तम तोयधि तिर सके न यह कर
तन सूखा, मन भूखा हारे
हे ऊपर के उज्ज्वल तारे।

गीत

हम जीवन से दूर तुहिन-तन।
अम्बर के हम सघन नयन से
भू के भाल झड़े मोती बन।

विपुल-बिम्ब निर्मित नूतन तन
बाल किरण से लिपट प्रेम से
हौले हौले हिल पल्लव में
सुनते खग के गीत नेम से
ढल ढल कर जब भू से पल पल
मिलने लग जाते घुल जीवन
हम दोनों के महा मिलन में
खिल खिल छिप जाता तारक-वन

हम पल्लव के एक क्षणिक-कण
सरस सरल सुन्दर शीतल हम
हम उज्ज्वल अभिराम मृदुल-मन

गीत

सुख दुख दोनों में गाये जा

मानव तू कभी निराश न हो
तेरे धीरज का ह्रास न हो
पीड़ा का उदधि लहरता हो तू तिर तिर पार लगाये जा
सुख दुख दोनों में गाये जा ।

तम पूरित हों पथ भले अरे
तू डिगे न अविकल रहे अड़े
लेकर तूफाँ कुछ नये नये पग आगे नित्य बढ़ाये जा
सुख दुख दोनों में गाये जा

हँस ले रे जग, पल छिन जीवन
हँस ले उन्मन जड़ चेतन मन
दो दिन रहने वाले मानव दुनिया से नेह लगाये जा
मर कर भी तो आखिर वन्दे मंजिल पर दीप जलाये जा
सुख दुख दोनों में गाये जा

गीत

पुजारिन क्या लेगी वरदान ?
तेरे कोमल कर से संचित
भोले भाले फूल
मेरे कठिन कुरूप चरण पर
पाते हैं नित शूल
पुजारिन क्या दूं मैं उपहार ?
देव बस चरणों का ही प्यार।

ये अगनित जगमग दीपावलि
तेरे उर का स्नेह
लेकर, जल जल सजा रहे हैं
तेरे तम का गेह
करूँ क्या मैं इनका सम्मान ?
देव दे जलने का सामान।

हम काले टेढ़े पत्थर पर
तू करुणा का फूल
इस करुणा श्रद्धा सनेह को
कैसे जाऊँ भूल
इसीसे कहता बारम्बार
पुजारिन क्या लेगी वरदान ?
देव बस पूजा का अरमान।

गीत

मौन क्यों लहरों के संगीत ।
विपिन आँगन के लाखों लाल
विटप के ये लघु पल्लव बाल
हवा में हौले हौले डोल सतत गाते रहते हैं गीत
मौन क्यों लहरों के संगीत

आज सुख में मज्जित संसार
हर्ष का उमड़े पारावार
रिक्त वसुधा की प्याली बीच गगन से ढले कनक रस पीत
मौन क्यों लहरों के संगीत

सोचते क्या कुछ मेरे प्राण
हृदय तारों में उलझे गान
खोल गीली पलकें निज देख, उठाओ कदम हार या जीत
मौन क्यों लहरों के संगीत

प्रगति के पथ पर

युग देवता

(१)

दिये सब को समता सम्मान
मनुज थे या वे देव महान

रही मानवता पल पल डूब
बही भू पर पीड़ा की धार
विलखते मानव की सुन आह
विकल था यह सारा संसार

विषमता नित जीवन के बीच
रही थी फैल रही थी खेल
हुआ जाता था दुर्बल दीन
परस्पर में घर-घर का मेल

पड़ी थी इन राज्यों की नींव
उन्हीं दलितों का जीवन लूट
आज जिनके घर घर की लाज
रही दर दर पर चाबल कूट

और उनकी गोदी के लाल
सिहरते हैं सड़कों पर रोज

गली में सड़ी नली के बीच
विकल करते दाने की खोज

पग पग पर इन भिखमंगों को
घेरे रहता कितना अभाव
दुबले पतले इन नंगों को
इस राग-रंग से क्या लगाव

ये विवश अकिंचन पदमर्दित
गिन गिन अपना दिन बिता रहे
पशु बन कर तुम मानव कैसे
चुन-चुन कर इनको सता रहे

अविरल आँखोंसे नीर झड़े
इस से ही तेरे बनजारे
चुप चाप सुलग बुझ जाते है
उड़ उड़ कर उर के अंगारे

तम में टटोलता चला आज
कंकाल बना जग का जीवन
पर उनकी गति है रोक रहा
युग से जग का जर्जर बंधन

जले जग तम में बन कर दीप तुम्हारे नव दर्शन का ज्ञान
दिये जिनने समता सम्मान मनुज थे या वे देव महान

(२)

कर फैला रोटी माँग रहे
उन भिखमंगों को जगा दिया
तुम मानव हो मानव से डर
उनके उर से भय भगा दिया

यह धरती है सारी तेरी
तेरा अम्बर सागर पहाड़
तुम देख सम्हल कर पीछे फिर
तेरा घर कैसा है उजाड़

ये राज-पाट ये राज-महल
सब तेरे तूने बतलाया
इस पगदंडी को छोड़ चलो
तू ने उन्नत पथ दिखलाया

उन उन्मन निरे हताशों को
जीवन में हैं अनुराग दिये
उन रूखे सूखे कंठों में
नव-युग का नूतन राग दिये

विजित पद दलित धरा के बीच
उड़ाये नभ में लाल निशान

जगाये उन वर्गों के लोग
जिन्हे कहते मजदूर किसान

बने आधार, उठाये देव
अरे उनके कुचले अरमान
सिखाये उन अबलों को देव
मनुज होने का हो अभिमान

भरम केवल केवल अज्ञान
न रहता गगन बीच भगवान
अरे ! है केवल मनुज महान
उठो ! कर जीने का सामान

लिखे अविकल तूने चुपचाप
ठिठुर कर भूखे रह रह ज्ञान
एक दिन गये दुखों के बीच
विहँसते मनुज देव के प्राण

तुम्हारे चरणों का हे देव नमन करते वसुधा के प्राण
दिये सब को समता सम्मान मनुज थे या वे देव महान

लाल सितारा

चमके लाल सितारा ।

निविड़ तिमिर में गिरि गहवर में
अतल उदधि की लोल लहर में
अजिर अजिर में डगर डगर में
चमके लाल सितारा

अथक उमंग विपुल बल वाला
शान्ति-सुधा गौरव गुण-शाला
चिर नवीन यह अजय अमर है
प्रभापूर्ण नव-जीवन वाला
चमके लाल सितारा

देख देख जिसको जग जागे
कोटि कोटि उर से भय भागे
निखर निखर पथ पर बढ़ बढ़कर
समर भूमि में आगे आगे
चमके लाल सितारा

अगणित उत्पीड़ित का जीवन
नव-दिनकर के अरुण-किरण-कण

ज्योतिर्मय करने जग सारा
ले जीवन का नूतन दर्शन
चमके लाल सितारा

लाल वाल में वन उपवन में
देश देश में अखिल भुवन में
मिटा विषमता उपजा समता
युग युग जग-जीवन जीवन में
चमके लाल सितारा

लाल फौज

जय हो कदम कदम पर तेरी
नव युग के लाने वाले
आजादी का गीत विश्व में
झूम झूम गाने वाले
बढ़ते चले निरंतर निर्भय
जग मंगल करने वाले
अपनी जान जला जगती का
घर झिलमिल करने वाले

तेरे बढ़ते पग आगे को
जन की विजय निशानी है
लाल रूस का अचल अरुण दल
दलितों का सेनानी है

तेरी कुर्बानी पग पग पर
गढ़ती लाल कहानी है
रुके न पल भर कभी आज तक
क्या पत्थर क्या पानी है
जय हो पावन लाल भूमि की
महा मनुज लेनिन की जय हो
बोल बोलगा बापू की जय
गंगे स्तालिन की जय जय हो
दलित-गलित-जन-अखिल विश्वके
गाओ साम्यवाद की जय हो
जनता के इस महा समर में
कवि कह लाल फौज की जय हो
तुझे ध्वस्त करने वाले खुद
खड़े विफल पछतायेंगे
हम जगती के विकल मनुज मिल
मुक्त-कंठ यश गायेंगे
या तो होगा साम्यवाद, या
हम कट मर मिट जायेंगे
पर फासिज्म नहीं पनपेगा
भले न हम रह पायेंगे
समता का वर दे जगती को
मर मर कर जीने वाले

मानवता के बिखरे पट को
बढ़ बढ़ कर सीने वाले
नई जिन्दगी नई सभ्यता
नव विचार देने वाले
जय हो कदम कदम पर तेरी
नव युग के लानेवाले

जागरण गान

आज प्राण के कौतुकवालो
कल संसृति तो लाल बनेगी
सुलग सुलग कर चिता पर्ण की
कल महलों में ज्वाल बनेगी
यह पापी अपमान जाति का
यह पापी अपमान प्राण का
बोल बोल कब तक छवि तेरी
बनी हुई कंकाल रहेगी

भूल गया क्या तू पुरातन
भूल गया क्या अरमानों को
क्या जाने कैसे जीता है
खो खो निशदिन सम्मानों को
वह भी कोई जाति अभागे
वह भी कोई चमन अभागे ?
जहाँ हृदय की मौज मर गई
पी कर पल छिन अपमानों को

देख देख यह दशा अभागो
कंकालों की भीड़ सड़क पर
जा कुटियों की मौनावलि से
रोती है क्यों पूछ सड़क पर
गगन विचुम्बित महल महल पर
आडम्बर की चहल पहल पर
जीना है तो कंकालों को
उठ उठ कर ललकार सड़क पर

अरे लीक पर चलने वालो
कोटि कोटि फिटकार तुम्हें है
अरे सीक से डरने वालो
कोटि कोटि फिटकार तुम्हें है
कीड़ा बन बिलबिला रहा है
सड़ी नली में घूम रहा है
जननी की फिटकार तुम्हें हैं
जीवन की फिटकार तुम्हे है

विजय पंथ पर ठहर ठहर कर
देख रहे रुक क्या जय बोलो
बढ़ कर आज अभागो आगे
अबलों की जंजीरें खोलो
अगर आज तुम उठ न सकोगे
मसल कुचल देगा रथ युग का

कर विश्वास जरा पौरुष पर
एक बार बस तूम जय बोलो

तुम एकाकी नहीं साथ में
दुनिया के मजदूर खड़े हैं
देख चकित साथी सब अपने
मंजिल से क्यों दूर पड़े हैं
क्या संचित अरमान तुम्हारे
नहीं मचलते नहीं किलकते
यह निर्बलता महानाश की
भूखे जो मजबूर पड़े हैं

वह तरणी क्या धार तिरेगी
हो जिस पर पतवार नहीं है
पग पग पर अपमान मुवारक
जब निज पर अधिकार नहीं है
वह तो सड़ी जाति जगती की
वह तो मरी जाति जगती की
ललकारे वन बीच केसरी
पर टूटी तलवार नहीं है
मुक्ति पूर्ण के लिए प्राण तक
भी भोले बलिदान नहीं हैं
रंग मंच पर गरम गरम कुछ
यही समर, मैदान यही है

जिसे न जीना है, सोकर भी
मरने का अधिकार नहीं है
उलट न दे आसन शोषण का
वह मजदूर किसान नहीं है

तुम्हें चाहिये या न बोलो
जीने का अधिकार अभागो
तुम्हे चाहिये या न बोलो
मानव सा सत्कार अभागो
यह कब तक टुकड़ों पर जीना
पापी कब तक आँसू पीना
बोलो मानव या पत्थर की
गूँजे जय जय कार अभागो

पुकार

जग जागे युग युग का जीवन
मेरा नव विचार जागे
ज्ञान प्राण बन चले दीप ले
पथ से अंधकार भागे
सदियों से कुचले मानव की
एक बार जग जय बोले
रोती कुटियों का हर कोना
एक बार छविमय होले
उसे सफलता मिली निरंतर
जिसने दुआ नहीं माँगी
उसे भीख भी मिल न सकी है
जिसने कर झाली टाँगी
लुटते आये हैं महलों के
जगती में सोने वाले
पर तू ने क्या क्या खोया है
जीवन भर रोने वाले
हिलता है मानव का बंधन
युग ने ली अंगड़ाई है

तेरे उठने के अवसर पर
मानव अमित बधाई है
तेरे उन्नत भाल चरण पर
और न अब झुकने पावें
तेरे बढ़ते पग आगे को
और न अब रुकने पावें
आज प्राण में पीड़ाओं की
अंतिम घड़ी निकट आई
आजादी की, लाल देश में
देखो परी निकल आई
जग मंगल का अग्रदूत बन
ओ आँसू पोंछने वाले
खेतों खलिहानों निशिदिन में
ओ मर मर जीने वाले
बिखरे अंग पड़े समाजके
उठ उठ नव निर्माण करो
बिसरे जिनको थे जन तेरे
मानव हो सम्मान करो
राजा रानी के जीवन को
घटनायें इतिहास नहीं
यह उनका होने न दिया जिनने
तेरा सुविकास कहीं
वसुधा के कण कण में अंकित

तेरी अमर कहानी है
आशा कोटि कोटि दलितों की
तेरी लाज निशानी है
बधिर देवता के कलशों में
तेरे तन का पानी है
तू ही बतला तुम दोनों में
कौन बड़ा सा दानी है
मानव के ये दलित वर्ग सच
कितने भोले भाले हैं
निर्मल उर रखने वाले ये
कितने तन से काले हैं
अपनी करुणा की धारा में
बहा चुके अरमान सभी
कुचले मानस की पीड़ा में
भुला चुके अभिमान सभी
छान छानकर खाक, स्वर्ण-कण
तूने हैं कितने पाये
चुरा लिया चुपके से किसने
अब तक जान नहीं पाये
चूती है दिन रात 'मड़ैया'
काली रात भरा भादो
यह उनका घर जिनके करसे
सोना बने सड़ा कादो

घूम घूम जिसने किरणों में
वसुधा की छाती फाड़ी
आखिर लहरा दी मरु में भी
हरी भरी नव फुलवारी
ताकत ! उठा हथौड़ा कर में
पत्थर से तकरार करे
युग युग से उमड़े भूधर का
गढ़ गढ़ कर सिंगार करे
जीवन सुधा झड़े उपवन को
पिला पिला गुलजार करे
धन्य धन्य बलिदान तुम्हारा
हरा भरा संसार करे
फूल धार पर चढ़ा छोड़ दे
काँटों का सत्कार करे
मधु से भरे लुटेरों का घर
आप खिजाँ से प्यार करे
उनके सुत आगे टुकड़ों के
बढ़ बढ़ कर तलवार धरे
लिखा न तुरबत, पर कवि ने कुछ
लिपट धरा चुपचाप मरे
तेरे महलों के पीछे है
छोटे से घर का चारा
मानव उनसे भी ऊँची है

क्या तेरी मथुरा काशी
कोटि कोटि भिक्षमंगों का दल
उमड़ा पारावार बना
काट काट चल पड़ा बहाने
तट का शोषक विटप तना
मंजिल पर किसकी पुकार है
कम से कम तो हामी दे
युग प्रस्तुत स्वागत करने को
उठ उठ लाल सलामी दे

लाल-अभियान

अभिनन्दन कर रहा, विश्व के
कोटि कोटि दलितों का जीवन
थर थर काँप रहा है कर में
मानव पर मानव का बन्धन
होने को विलीन आया है
दारुण, कंकालों का क्रन्दन
लाल लाल हर ओर देखता
शोभित भाल भाल पर चन्दन

छा जाये उड़ उड़ मानस में
आज लाल अरमान तुम्हारा
स्वागत कोटि कोटि कंठों से
आज लाल अभियान तुम्हारा

अरुणोदय हो रहा, जगाता
अनुरंजित हो पथ का कण कण
विहग गा रहे गीत-जागरण
मानव हो खोता क्यों क्षण क्षण

सुरभि समीरण लिए, कर रहा
सुरभित घूम घूम कर वन वन
पावन अरुण किरण से कर ले
असित अपावन अपना तन मन

नव उमंग की नव जीवन की
मचा धूम दे गान तुम्हारा
स्वागत कोटि कोटि कंठों से
आज लाल अभियान तुम्हारा

आज सुलभ हो रहा युगों का
सुन्दर - नव - निर्माण जगत का
तेरी गति में गूँज रहा है
अभय राग इस दलित जगत का
आज दलमलित भूप झुक रहा
रजत - पीठ आरूढ़ जगत का
जहाँ लाल अभियान हुआ है
देखो नूतन रूप जगत का

अभय खड़ा ललकार रहा है
आज लाल अभिमान तुम्हारा
स्वागत कोटि कोटि कंठों से
आज लाल अभियान तुम्हारा

उद्भासित हो रहीं दिशायें
स्वर्ग धरा पर उतर रहा है

मार्जन विकल वपु विश्व तुम्हारा
धोने अम्बुधि लहर रहा है
उदित अरुण आदर्श पंथ पर
अमृदूत बन विहँस रहा है
सफल देख अरमान अवनि पर
कवि तापस लो, मचल रहा है

अनुप्राणित कर रहा विश्व को
पग पग पर अभियान तुम्हारा
स्वागत कोटि कोटि कंठों से
आज लाज अभियान तुम्हारा

कय्यूर के शहीदों के प्रति

अरुण अरुण नमस्कार
अमर तरुण बार बार

भेद गये अंधकार
जला मधुर प्राण दीप
ज्योति जगी आर-पार

अरुण अरुण नमस्कार
अमर तरुण बार बार

दलितों की सुन पुकार
समता हित जूझ गये
जीवन धन के उदार

अरुण अरुण नमस्कार
अमर तरुण बार बार

मरण ग्रंथि बीच लिपट
साम्यवाद अमर बने
बोल, गये नियति निकट

अरुण अरुण नमस्कार
अमर तरुण बार बार

उठो पथिक अमर पंथ
अमर लक्ष्य आगे
बढ़ते चल सिखा गये
चल चल बल जागे

अरुण अरुण नमस्कार
अमर तरुण बार बार

विप्लव उसको खोज रहा है

जिसे न जीवन से ममता है
राग रंग में भी जड़ता है
डूब रहा है फिर भी हँसता जो लहरों को बुला रहा है
विप्लव उसको खोज रहा है

विपदाओं का अन्त नहीं है
देखा कभी वसन्त नहीं है
अविकल परहित मौन धरे जो अपने सर को कटा रहा है
विप्लव उसको खोज रहा है

कालकूट पी झूम रहा है
आग लगाता घूम रहा है
बलिवेदी पर कफन लिए जो बधिकों को ललकार रहा है
विप्लव उसको खोज रहा है

जीवन में जो झुक न सका है
अपने पथ पर रुक न सका है
पथ सीधा करने भूधर जो अपने कर से तोड़ रहा है
विप्लव उसको खोज रहा है

भूखा है, पर अन्न नहीं है
तन पर जिसको बसन नहीं है
चिनगारी वाली आँखों से जो महलों को घूर रहा है
विप्लव उसको खोज रहा है

जो डोरी पर झूल गया है
जो काँटों पर फूल गया है
उन माँ की आँखों से आँसू जो चिथड़ों से पोंछ रहा है
विप्लव उसको खोज रहा है

चिमनी पर बढ़ बढ़ कर चढ़कर
जो खलिहानों में जा जा कर
हंसिया और हथौड़ा वाला लाल पताका गा रहा है
विप्लव उसको खोज रहा है

नभ से शोले बरस रहे हैं
गोले रह रह भभक रहे हैं
लेकर जान हथेली पर जो खुद विपलव को खोज रहा है
विप्लव उसको खोज रहा है